अध्याय 32

एलीहू के बोलने की आवश्यकता

अध्याय 32 में एक नया वक्ता अचानक से आ जाता है। यह राम के वंश के बूजी बारकेल का पुत्र एलीहू है। तीनों मित्रों की तरह एलीहू के बारे में जानकारी उसके भाषणों वाले अध्यायों से ही ली जानी चाहिए (32:1–37:24)। स्पष्टतया वह अब्राहम के भाई नाहोर की संतान था (उत्पत्ति 22:21)। वह सम्भवतया बूज से आया था जो तेमा के इलाके में ही था (यिर्मयाह 25:23), आज चाहे यह पक्का पता नहीं चल सकता कि वह इलाका कहां पर था। तेमा का सम्बन्ध आम तौर पर उत्तर पश्चिमी अरबी प्रायद्वीप के साथ जोड़ा जाता है (6:15–20 पर टिप्पणियां देखें)।

उन्नसवीं सदी के आरम्भ से एलीहू के भाषणों की जगह और उनकी प्रामाणिकता के सम्बन्ध में चर्चाएं हुई हैं (देखें पृष्ठ *एलीहू के भाषणों की ऐतिहासिक आलोचना* 189–91)। कुछ विद्वान इन भाषणों अतिक्रमण या सहायक मानते हैं। एक ने तो यहां तक टिप्पणी कर दी, ‘‘एलीहू की बातों से पुस्तक के सार में कोई बढ़ोतरी नहीं होती।’’[1] मैं नहीं मानता! क्योंकि सम्पूर्ण पवित्र शास्त्र ‘‘लाभदायक है’’ (2 तीमुथियुस 3:16), इसलिए इन अध्यायों से काफ़ी परिशिष्ठ देते हैं। होमेर हेली ने अच्छा कहा है,

> इनको जो यह विचार रखते हैं कि चर्चा में एलीहू का योगदान मामूली है या बिल्कुल नहीं है, जवाब में यह मानना तर्कसंगत है कि एक ऐसे वक्ता के लिए जिसने कोई काम की बात नहीं की छह अध्याय दिए गए। इसके अलावा एलीहू दृश्य में उस समय आया जब बड़ी उलझन थी; मित्र हार चुके थे, अय्यूब ने गलत विचार बताते हुए ऐसे बातें कहीं थीं जो सच नहीं थीं। और परमेश्वर के काम को बहुत गलत समझा गया था। एलीहू को एक मिशन को पूरा करना था। मेरा विचार यह है कि उसने अय्यूब तथा मित्रों द्वारा चर्चा किए जाने वाले प्रश्नों में एक नया दृष्टिकोण देकर बड़ा योगदान दिया, एक ऐसा दृष्टिकोण जो उनकी पराम्परिक धारणाओं से मुक्त था और उसके भाषणों को इसी प्रकार में विचारा जाना चाहिए।[2]

एलीहू का अपने मित्रों पर क्रोध (32:1–5)

1तब उन तीनों पुरुषों ने यह देखकर कि अय्यूब अपनी दृष्टि में निर्दोष है उसको उत्तर देना छोड़ दिया। 2तब बूजी बारकेल का पुत्र एलीहू जो राम के कुल का था, उसका क्रोध भड़क उठा। अय्यूब पर उसका क्रोध इसलिये भड़क उठा कि उसने परमेश्वर को नहीं, अपने ही को निर्दोष ठहराया। 3फिर अय्यूब के तीनों मित्रों के विरुद्ध भी उसका क्रोध इस कारण भड़का कि वे अय्यूब को उत्तर न दे सके, तौभी उसको दोषी ठहराया। 4एलीहू अपने को उन से छोटा जानकर अय्यूब की बातों का अन्त होने की बाट जोहता रहा। 5परन्तु जब एलीहू ने

देखा कि ये तीनों पुरुष कुछ उत्तर नहीं देते, तब उसका क्रोध भड़क उठा।

एलीहू का वर्णन ''क्रोधी'' ''बातों से भरे जवान'' में किया गया है। उसके क्रोधी होने की बात अध्याय के आरम्भ में बताई गई है (32:2, 3, 5)। ''उसके मन में बातें भरी'' थीं इस अध्याय के अंत में स्पष्ट पता चलता है (32:18)। यह बात वाली विशेषता उसके क्रोध के कारण के मूल को समझने के बजाय आसानी से पढ़ी जाने वाली मानी जाती है।

आयत 1. तीन मित्र अय्यूब को यह विश्वास नहीं दिला पाए थे कि उसने पाप किया। **छोड़ दिया** (*shabath, शाबाथ*) संकेत देता है कि उन्होंने उसे उत्तर देना बंद कर दिया या छोड़ दिया था। इस संदर्भ में **निर्दोष** (*tsaddiq, साद्दिक़*) का अर्थ है अय्यूब उस पर लगाए गए तीनों लोगों के आरोप से निर्दोष था।

आयत 2. यह आयत अगले वक्ता की ओर ले जाती है जिसका नाम पुस्तक में **एलीहू** है। रॉबर्ट एल. आल्डन ने पाया, ''पुस्तक में केवल वही एक पात्र है जिसकी वंशावली दी गई है, जिसे कुलीन वंश का कहा जा सकता है।''[3] जॉन ई. हार्टले ने एक अलग विचार दिया है: ''यह पूरी वंशावली एलीहू की जवानी को दिखाती है और उसकी अपनी व्यक्तिगत प्राप्ती की खामी को दिखाती है।''[4]

''एलीहू'' नाम का अर्थ है ''वह मेरा परमेश्वर है।'' एलीहू के पिता का नाम **बारकेल** था, जिसका अर्थ है ''परमेश्वर आशीष देता है।'' **बूजी** सम्भवतया इस बात का संकेत देता है कि वह बूज के गोत्र से था जो कि अब्राहम का भतीजा था (उत्पत्ति 22:21), और उसका पालन पोषण शायद उसके नाम वाले नगर में ही हुआ (यिर्मयाह 25:23)। एलीहू **राम** के **कुल** (NJB; NLT) से था, जिसके नाम का अर्थ है ''ऊंचा किया गया।'' सेमुएल कॉक्स ने लिखा है, ''एलीहू एक ऐसे परिवार से था जिसमें एक परमेश्वर और प्रभु की सबसे मौलिक परम्परा को बरकरार रखा और माना जाता था।''[5]

अय्यूब उन चारों जनों पर क्रोधित हुआ जिन्होंने इतने लम्बे लम्बे भाषण दिए थे। वह अय्यूब पर क्रोधित था **कि उसने परमेश्वर को नहीं, अपने ही को निर्दोष ठहराया**। क्रिया शब्द ''निर्दोष ठहराया'' आयत 1 वाले विशेषण ''निर्दोष'' वाले इब्रानी मूल शब्द से ही लिया गया है। वास्तव में अय्यूब ने इस बात पर ज़ोर दिया था कि वह मित्रों द्वारा उसके ऊपर लगाए गए आरोपों का दोषी नहीं था।

आयत 3. फिर अय्यूब के तीनों मित्रों के विरुद्ध भी उसका क्रोध इस कारण भड़का कि वे अय्यूब को उत्तर न दे सके, तौभी उसको दोषी ठहराया। यह आयत अध्याय 4 से 26 के भाषणों पर *मानवीय* निर्णय देती थी। *ईश्वरीय* निर्णय अध्याय 38 से 42 में मिलेगा। रॉबर्ट एल. आल्डन ने मित्रों के लिए कहा, ''ऊपर ऊपर से उनका मुकद्दमा विश्वास दिलाने वाला लगा, परन्तु वे अपने तर्कों के समर्थन के साथ अय्यूब को गलत साबित नहीं कर पाए। यह औपचारिक विचारविमर्श के बजाय चीखने चिल्लाने में बदल गया, सो एलीहू ने सभी पक्षों की निंदा की।''[6]

आयत 4. प्राचीन काल में किसी जवान के लिए अपने मन की बातें कहने के बजाय *सुनना* अच्छा तरीका माना जाता था (29:7–10)। **एलीहू** अच्छा सुनने वाला था जैसा कि उसके भाषणों से पता चलता है। चाहे कई बार उसने बोलना चाहा पर वह **बाट जोहता** और अपने बुज़ुर्गों के प्रति आदर के कारण चुप रहा।

आयत 5. एलीपज, बिलदद और सोपर ने उत्तर देना बंद कर दिया था (32:1), इस कारण **एलीहू** बोलने लगा। अब वह अपने आपको काबू में नहीं रख पाया; उसे **उसका क्रोध** कम करने के लिए बोलना ही था। यह पद्य बार-बार ज़ोर देता है कि एलीहू का क्रोध **भड़क उठा** (32:2, 3, 5)।

एलीहू की पहले बोलने से हिचकिचाहट (32:6-10)

6तब बूजी बारकेल का पुत्र एलीहू कहने लगा, ''मैं तो जवान हूँ, और तुम बहुत बूढ़े हो; इस कारण मैं रुका रहा, और अपना विचार तुम को बताने से डरता था। 7मैं सोचता था, 'जो आयु में बड़े हैं वे ही बात करें, और जो बहुत वर्ष के हैं, वे ही बुद्धि सिखाएँ।' 8परन्तु मनुष्य में आत्मा तो है ही, सर्वशक्तिमान की दी हुई साँस, जो उन्हें समझने की शक्ति देता है। 9जो बुद्धिमान हैं वे बड़ी आयु के लोग ही नहीं, और न्याय के समझनेवाले बूढ़े ही नहीं होते। 10इसलिये मैं कहता हूँ, 'मेरी भी सुनो; मैं भी अपना विचार बताऊँगा।'''

आयतें 6, 7. युवा होने के कारण **एलीहू** ने अपने आपको बोलने से रोके रखा; क्योंकि वह **सोचता था** कि **जो आयु में बड़े हैं वे ही बात करें, और जो बहुत वर्ष के हैं, वे ही बुद्धि सिखाएँ**। बुद्धि के साहित्य में यह सही शिष्टाचार था। संसार की ''बुद्धि'' अनुभव और अवलोकन से मिलती है इसलिए यह स्वभाविक है कि बुढ़े लोगों के पास यह अधिक होनी चाहिए थी (15:9, 10 पर टिप्पणियां देखें)।

मैं सोचता था वाक्यांश मूल में ''मेरा ज्ञान'' है। संज्ञा शब्द ''ज्ञान'' (*dea',* *दिआ*) का सम्बन्ध किया शब्द ''जानना'' (*yada',* *याडा*) से है। विलियम डी. रेमंड ने लिखा है, ''एलीहू यहां पर संकोच से बात नहीं कर रहा है जैसे कि वह अपना *विचार* दे रहा है बल्कि वह अपने 'ज्ञान' की बात कर रहा था और इस कारण इब्रानी भाषा के इस शब्द का अर्थ वास्तव में 'तुम्हारे सामने मेरे ज्ञान का पर्दाफाश कर दिया,' 'ताकि मैं तुम्हें वह बता दूं जो मुझे पता है।'''[7]

आयत 8. ''परन्तु मनुष्य में आत्मा तो है ही, सर्वशक्तिमान की दी हुई साँस, जो उन्हें समझने की शक्ति देता है।'' ''परन्तु'' (*'aken,* *आकेन*) का बहुत विरोधात्मक बल है। यह उसके बिल्कुल विपरीत है जो एलीहू ने बुज़ुर्गों की बुद्धि के बारे में अभी अभी कहा था (32:6, 7)।

''मनुष्य में आत्मा'' का कुछ संस्करणों में अनुवाद ''परमेश्वर की आत्मा'' (NEB) या ''परमेश्वर का आत्मा'' (NLT) है। परन्तु यह लगता है कि हार्टले की बात सही थी:

> मानवीय जीव में आत्मा का होना अंतरदृष्टि का एक आवश्यक स्रोत है, क्योंकि यह किसी के मन की भावनाओं को जांच लेती है (तुलना 1 कुरिन्थियों 2:10-16)। यह व्यक्ति के चिंतनशील विचार वाली जगह है। आत्मा व्यक्ति के विचारों तथा व्यवहारों का मूल्यांकन करके उसके मनोभावों को परखती है।[8]

मानवीय जीवों को परमेश्वर के स्वरूप पर बनाया गया है, इस कारण इसका अर्थ यह हुआ कि तर्क करने और समझने की शक्ति उसी से मिलती है (उत्पत्ति 1:26, 27)।

आयत 9. ''जो बुद्धिमान हैं वे बड़ी आयु के लोग ही नहीं, और न्याय के समझनेवाले बूढ़े ही नहीं होते।'' परोक्ष रूप में एलीहू यह कह रहा था कि बूढ़े लोग मूर्ख हो सकते हैं। यह

नियम सभोपदेशक 4:13 में भी मिलता है। ''बुद्धिमान लड़का दरिद्र होने पर भी ऐसे बूढ़े और मूर्ख राजा से अधिक उत्तम है जो फिर सम्मति ग्रहण न करे।''

आयत 10. एलीहू ने अय्यूब और मित्रों से कहा कि **सुनो** ताकि वह अपने विचार बता सके। आयत 6 की तरह इब्रानी शब्द का अनुवाद **विचार** का संकेत विचार से बढ़कर है कि वह अपना ज्ञान बताने वाला था।

एलीहू का ध्यान से सुनना (32:11–14)

[11]''मैं तो तुम्हारी बातें सुनने को ठहरा रहा, मैं तुम्हारे प्रमाण सुनने के लिये ठहरा रहा; जब कि तुम कहने के लिये शब्द ढूँढ़ते रहे। [12]मैं चित्त लगाकर तुम्हारी सुनता रहा। परन्तु किसी ने अय्यूब के पक्ष का खण्डन नहीं किया, और न उसकी बातों का उत्तर दिया। [13]तुम लोग मत समझो कि हम को ऐसी बुद्धि मिली है, कि उसका खण्डन मनुष्य नहीं परमेश्वर ही कर सकता है। [14]जो बातें उस ने कहीं वह मेरे विरुद्ध नहीं कहीं, और न मैं तुम्हारी सी बातों से उसको उत्तर दूँगा।''

आयतें 11, 12. क्रूद्ध युवा मित्रों की **बातें** और उनके **प्रमाण चित्त लगाकर सुनता रहा** था। उसका निष्कर्ष था कि **किसी ने अय्यूब के पक्ष का खण्डन नहीं किया** और न उनमें से किसी ने **उसकी बातों का उत्तर दिया** था। जैसा पहले संकेत दिया गया था, एलीहू की प्रतिक्रिया अय्यूब और उसके मित्रों के बीच की बात-चीत पर *मानवीय निर्णय* देती है (32:3 पर टिप्पणियां देखें)।

आयत 13. एलीहू ने मित्रों की ओर से उत्तर की कल्पना की: ''**हम को ऐसी बुद्धि मिली है, कि उसका खण्डन मनुष्य नहीं परमेश्वर ही कर सकता है।**'' मित्र अय्यूब को हरा नहीं पाए थे इस कारण उन्होंने अपना मुकद्दमा परमेश्वर को सौंप दिया। सचमुच में अंतिम वचन परमेश्वर का ही होना था। एलीहू ने भी परमेश्वर के आंधी में से प्रकट होने की कल्पना नहीं की (38:1)।

आयत 14. ''**जो बातें उस ने कहीं वह मेरे विरुद्ध नहीं कहीं, और न मैं तुम्हारी सी बातों से उसको उत्तर दूँगा।**'' आल्डन को इस कथन में ''अहंकार की बू'' लगी; एलीहू ने दावा किया कि उसके आने से पहले तक अय्यूब ने सचमुच के विरोधी का सामना नहीं किया था।[9] अब तक अय्यूब ने एलीहू के ''विरुद्ध बातें नहीं कहीं थीं।'' क्रिया शब्द ''कहीं'' (*'arak, आराक*) 13:18 में भी मिलता है जहां इसका इस्तेमाल कानूनी मुकद्दमे की तैयारी के लिए किया गया है। यदि एलीहू ने अय्यूब के साथ बहस की, तो उसने मित्रों के ''ओछे'' तर्कों का इस्तेमाल नहीं किया।

एलीहू का राहत पाने का तरीका (32:15–22)

[15]''वे विस्मित हुए, और फिर कुछ उत्तर नहीं दिया; उन्होंने बातें करना छोड़ दिया। [16]इसलिये कि वे कुछ नहीं बोलते और चुपचाप खड़े हैं, क्या इस कारण मैं ठहरा रहूँ? [17]परन्तु अब मैं भी कुछ कहूँगा, मैं भी अपना विचार प्रगट करूँगा। [18]क्योंकि मेरे मन में बातें भरी हैं, और मेरी आत्मा मुझे उभार रही है। [19]मेरा मन उस दाखमधु के समान है, जो खोला न गया हो; वह नई कुप्पियों के समान फटा चाहता है। [20]शान्ति पाने के लिये मैं

बोलूँगा; मैं मुँह खोलकर उत्तर दूँगा। [21]न मैं किसी आदमी का पक्ष करूँगा, और न मैं किसी मनुष्य की चापलूसी करूँगा। [22]क्योंकि मुझे तो चापलूसी करना आता ही नहीं नहीं तो मेरा सिरजनहार क्षण भर में मुझे उठा लेता।''

आयत 15. एलीहू ने मित्रों की असफलता के अपने निष्कर्ष को जारी रखा, जिनके पास अब अय्यूब के लिए कोई उत्तर नहीं था (32:1, 5)। क्रिया शब्द **विस्मित हुए** को *chathath* (*चाठाथ*) से लिया गया है जिसका अनुवाद ''धक्का लगना'' या ''निराश होना'' भी हो सकता है।[10] हार्टले ने बताया है, ''यह पराज्य से उत्पन्न हुए भय, अपमान और गड़बड़ पर ज़ोर देता है। यहां पर मित्र विवाद से डर गए हैं।''[11]

आयत 16. एलीहू के चतुराई भरे प्रश्न ''**क्या ... मैं ठहरा रहूं?**'' का उत्तर ''नहीं'' में मिलने की उम्मीद थी। उसने उत्तेजित होकर तर्क दिया कि मित्रों की खामोशी उसके उपदेश के लिए खुला द्वार था।

आयत 17. ''परन्तु अब मैं भी कुछ कहूँगा, मैं भी अपना विचार प्रगट करूँगा।'' ''मैं भी'' और ''मैं भी'' ज़ोर देते हुए अभिव्यक्ति *'ap 'ani* (*आप अनी*) का अनुवाद है जिसे इब्रानी धर्मशास्त्र में दोहराया गया है। इतनी देर तक अय्यूब और मित्रों की सुनने के बाद एलीहू का विश्वास था कि *उसकी भी* सुनी जानी चाहिए। ''विचार'' (*dea', डेआ*) का अच्छा अनुवाद ''ज्ञान'' है (32:6, 7, 10 पर टिप्पणियां देखें)।

आयत 18. एलीहू के मन में सचमुच में **बातें भरी** थीं! वह मित्रों के बिल्कुल उलट है जिन्होंने ''बातें करना छोड़ दिया'' था (32:15)। **मेरी आत्मा** मूल में ''मेरे पेट में आत्मा'' है। ''पेट'' (*beten, बेटेन*) को ज्ञान का गोदाम माना जाता है (नीतिवचन 22:17, 18)।

आयतें 19, 20. ''मेरा मन उस दाखमधु के समान है, जो खोला न गया हो; वह नई कुप्पियों के समान फटा चाहता है।'' एलीहू को लगा कि जैसे वह फटने वाला हो! यहां पर इस्तेमाल हुआ रूपक यीशु द्वारा इस्तेमाल किए गए रूपक से थोड़ा अलग है जब उसने कहा कि ''लोग नया दाखरस पुरानी मशकों में नहीं भरते क्योंकि ऐसा करने से मशकें फट जाती हैं'' (मत्ती 9:17)। पुरानी मशकें पहले ही फैल चुकी होती थीं और उनमें नई दाखरस को फरमेंट किए जाने की प्रक्रिया को सम्भालने की क्षमता नहीं थी। इस वचन में समस्या यह है कि ''दाखरस'' ''बाहर नहीं निकला था'' रेमंड ने बताया कि फरमेंट होने वाला दाखरस गैस छोड़ता है, गैस के लिए रास्ता न होने पर दबाव बनता है जिससे वह पात्र जिसमें वह हो फट जाता है।''[12] एलीहू बात पर ज़ोर दे रहा था कि उसे **शांति पाने के लिए बोल**ना था (देखें यिर्मयाह 20:9)।

आयतें 21, 22. ''न मैं किसी आदमी का पक्ष करूँगा, और न मैं किसी मनुष्य की चापलूसी करूँगा।'' एलीहू ने अपने सुनने वालों को बताया कि वह सीधे-सीधे सच की बात करने को बाधित था। उसने किसी के प्रति पक्षपात नहीं दिखाना था। परमेश्वर के भय ने उसे इससे कम नहीं करने देना था।

प्रासंगिकता

दूसरों के साथ हमारा बोलचाल (अध्याय 32)

अय्यूब 32 में विवरण में एक पात्र का परिचय मिलता है। वह ऊर्जावान और जवान था

जिसका नाम एलीहू था। एलीहू अय्यूब और तीनों मित्रों की बहस को सुन रहा था और वह इस बात से परेशान था कि मित्र अय्यूब को शांत नहीं करवा पाए। धीरज से राह देखने के बाद अंत में एलीहू ने बात की। उसने काफी देर तक बात की क्योंकि उसके भाषण अध्याय 32 से 37 तक मिलते हैं। एलीहू की चाहे आलोचना हो सकती हैं पर अध्याय 32 में उसकी बातें बोलचाल के बारे में कुछ महत्वपूर्ण सबक दे सकती हैं।

अपने क्रोध और अपने शब्दों को काबू में रखने का महत्व। वचन तीन बार हमें बताता है कि एलीहू का ''क्रोध भड़का'' (32:2, 3, 5)। वह हाल फिलहाल से इतना परेशान था कि वह शांति पाने के लिए बोलना चाहता था (32:18–20)। हम कह सकते हैं कि एलीहू को ''अपनी छाती से कुछ बोझ उतारना'' था। उसको शाबाश कि अय्यूब और तीन मित्रों से बात करने से पहले उसने कुछ देर प्रतीक्षा की। हमें ''उतावले'' नहीं होना चाहिए यानी जल्दी से गुस्से में नहीं आ जाना चाहिए, याकूब ने कहा कि ''बोलने में धीर और क्रोध में धीमा'' होना चाहिए (याकूब 1:19)। आम तौर पर हम उतावली में बोल देते हैं और बाद में पछताते हैं कि हमने क्या बोल दिया। ऐसे कठोर शब्दों से दूसरों के अंदर तक चोट लगती है, उनके भी जिनसे हम बहुत प्रेम करते हैं।

दूसरों के लिए सम्मान रखते हुए बोलने की राह देखना। एलीहू ने अय्यूब और मित्रों का आदर करते हुए जो उम्र में उससे बड़े थे बोलने के लिए प्रतीक्षा की (32:4)। कुछ अध्याय पहले अय्यूब ने बड़े आदर सम्मान की बात की थी जो किसी समय उसका था जब वह फाटक पर बैठता था (29:8–10)। उम्र में बड़े लोगों का आदर करना बाइबल का एक महत्वपूर्ण नियम है। पौलुस ने तीमुथियुस को समझाया: ''किसी बूढ़े को न डांट, पर उसे पिता जानकर समझा दे, और जवानों को भाई जानकर; बूढ़ी स्त्रियों को माता जानकर। और जवान स्त्रियों को पूरी पवित्रता से बहिन जानकर, समझा दे'' (1 तीमुथियुस 5:1, 2)। हमें दूसरों को तीखा जवाब देने से बचना चाहिए। हो सके तो दूसरों के बीच में न रोकने के लिए सतर्क होकर बोलने की अपनी बारी की प्रतीक्षा करनी चाहिए। हमें तब तक किसी दूसरे को जवाब भी नहीं देना चाहिए जब तक हमें उसके प्रश्न की पूरी समझ नहीं आ जाती।

ध्यान से दूसरों को सुनना और उनसे सीखना। एलीहू ने अय्यूब और तीन मित्रों से उनके बातचीत करते हुए उनसे जी लगाकर सुना। उसने कहा, ''मैं सोचता था, 'जो आयु में बड़े हैं वे ही बात करें, और जो बहुत वर्ष के हैं, वे ही बुद्धि सिखाएँ''' (32:7)। ऐसा लगता है उसने अपने दिल और दिमाग को खुला रखा था जिससे वह इन बूढ़े लोगों से सुनने को तैयार था। याकूब ने लिखा कि हम ''सुनने के लिए तत्पर'' हों (याकूब 1:19)। लगातार बोलते रहने वाले लोग दूसरों से बहुत कम सीखते हैं। हमें दूसरों की बात को ध्यान से सुनना चाहिए और फिर उनकी बात को परमेश्वर के वचन के साथ मुल्यांकन करना चाहिए।

बुद्धि को हमेशा उम्र के साथ न मिलाना। एलीहू ने कहा, ''जो बुद्धिमान हैं वे बड़ी आयु के लोग ही नहीं, और न्याय के समझनेवाले बूढ़े ही नहीं होते'' (32:9)। उम्र में बड़े लोगों को अपने जीवन में अनुभव के कारण समझदार होना चाहिए। परन्तु यदि वे न तो अच्छी पसंद चुनते हैं और न परमेश्वर के वचन का अध्ययन करते हैं तो वे मूर्ख हो सकते हैं। ऐसे लोग हैं जो ''बूढ़ा मूर्ख'' की श्रेणी में आएंगे और ऐसे लोग हैं जो ''अपनी उम्र से अधिक स्याने'' होते हैं। जब यीशु बारह साल का था तो वह फसह के समय यरूशलेम में मन्दिर में चला गया था और उसने वहां सिखाने वालों के साथ गम्भीर बातों पर चर्चा की थी। वह ''उनकी सुनते और उनसे प्रश्न

करते हुए पाया। जितने उसकी सुन रहे थे, वे सब उसकी समझ और उसके उत्तरों से चकित थे'' (लूका 2:46, 47)। पौलुस ने तीमुथियुस को बताया, ''कोई तेरी जवानी को तुच्छ न समझने पाए; पर वचन, और चाल चलन, और प्रेम, और विश्वास, और पवित्रता में विश्वासियों के लिए आदर्श बन जा'' (1 तीमुथियुस 4:12)।

अपने ज्ञान को बांटने को तैयार होना। एलीहू जो उसे पता था उसे अय्यूब और उसके मित्रों के साथ बांटने को उत्सुक था (32:6, 10)। NASB में दोनों आयतों में ''मैं यह सोचता हूं'' वाक्यांश है, परन्तु इब्रानी धर्मशास्त्र में अधिक अक्षरश: इसका अनुवाद ''मेरा ज्ञान'' या ''जो मैं जानता हूं'' है। एलीहू थोड़ा अतिविश्वासी और अहंकारी लगता है (32:14)। तथ्य के साथ अपने व्यक्तिगत विचारों को उलझाना आसान है; निश्चित ही एलीहू की हर बात सही नहीं थी। इसके अलावा यदि हमारे पास सच्चाई हो भी तो भी हमें घमण्ड से बचना आवश्यक है। पौलुस ने लिखा, ''ज्ञान घमण्ड उत्पन्न करता है परन्तु प्रेम से उन्नति होती है'' (1 कुरिन्थियों 8:1; NIV)। जो सच्चाई हम बांटते हैं वह दूसरों की सहायता के लिए हमारे लगाव के कारण बोली जानी आवयश्क है। हमें ''प्रेम में सच्चाई से'' बोलना आवश्यक है (इफिसियों 4:15)।

दूसरों के प्रति निष्पक्ष होना। पक्षपात दिखाने के लिए एलीहू का विरोध किया गया। उसने कहा, ''न मैं किसी आदमी का पक्ष करूंगा ओर न मैं किसी मनुष्य की चापलूसी करूंगा'' (32:21)। आखिर एलीहू परमेश्वर से डरता था, ''परमेश्वर हाकिमों का पक्ष नहीं करता और धनी और कंगाल दोनों को अपने बनाए हुए जानकर उनमें कुछ भेद नहीं करता'' (34:19)। याकूब ने कलीसिया की सभा में जहां धनवान को कंगाल से बढ़कर आदर दिया जा सकता था, पक्षपात दिखाने के विरुद्ध चेतावनी दी (याकूब 2:1-7)। हमें हर किसी से सच बोलना चाहिए और चापलूसी से बचना चाहिए। हमें याद रखना चाहिए कि सब को परमेश्वर के स्वरूप पर बनाया गया है और इसी तथ्य के आधार पर उनके प्रति सम्मान दिखाना चाहिए।

सारांश। अध्याय 32 में अय्यूब हमें अपने बोलचाल के कौशल को बढ़ाने की चेतावनी देता है। हमें दूसरों के साथ बातचीत करते हुए आत्म-संयम और धीरज सीखना चाहिए। हमें अपने शब्दों का चयन समझदारी से करना चाहिए ताकि बाद में हमें पछताना न पड़े। दूसरों से सुनने को तैयार होकर हमें दूसरों की सुनना चाहिए। उम्र का आदर तो होना चाहिए पर हमें यह समझना आवश्यक है कि आवश्यक नहीं कि कोई बूढ़ा होने से समझदार बन जाए। हमें अपने ज्ञान को दूसरों के साथ उनकी सहजता करने के प्रयास में बांटना चाहिए। अंत में हमें दूसरों के प्रति पक्षपात या भेदभाव दिखाने से बचना चाहिए और याद रखना चाहिए कि परमेश्वर की नज़र में हर व्यक्ति का मोल है।

डी. स्टिवर्ट

टिप्पणियां

[1]विलियम डी. रेबर्न, *ए हैंडबुक ऑन द बुक ऑफ़ अय्यूब* (न्यू यॉर्क: यूनाइटेड बाइबल सोसायटीस, 1992), 589. [2]होमेर हेली, *ए कॉमैंट्री ऑन अय्यूब* (पृष्ठ नहीं: रिलिजियस सप्लाई, Inc., 1994), 275. [3]रॉबर्ट एल. आल्डन, *अय्यूब,* द न्यू अमेरिकन कॉमैंट्री (पृष्ठ नहीं: ब्रॉडमैन ऐंड होल्मन पब्लिशर्स, 1993), 316. [4]जॉन ई. हार्टले, *द बुक ऑफ़ अय्यूब,* द न्यू इंटरनेशनल कॉमैंट्री ऑन द ओल्ड टैस्टामैंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 429. [5]सेमुएल कॉक्स, *ए कॉमैंट्री ऑन द बुक ऑफ़ अय्यूब,* 2रा संस्क. (लंदन:

केगन पॉल, ट्रेंच ऐंड कंपनी, 1885), 417. [6]आल्डन, 316. [7]रेबर्न, 594. [8]हार्टले, 434. [9]आल्डन, 320. [10]लुडविग कोहलर और वाल्टर बामगार्टनर, द *हिब्रू ऐंड अरेमिक लेक्सिकन ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामैंट*, स्टडी एडिशन, अनु. व सम्पा. एम. ई. जे. रिचर्डसन (बोस्टन: ब्रिल, 2001), 1:365.

[11]हार्टले, 435, एन. 25. [12]रेबर्न, 601.